Vol 4 Issue 2 March 2014

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest,Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850
Volume-4 | Issue-2 | March-2014
Available online at www.isrj.net

वैश्वीकरण और हिंदी उपन्यास साहित्य (रेहन पर रग्घू, एक ब्रेक के बाद, दौड़ आदि उपन्यासों के संदर्भ में)

जहीरूद्दिन रफियोद्दिन पठान

अध्यक्ष, हिंदी विभाग कै. बाबासाहेब देशमुख गोरठेकर कॉलेज, उमरी, जि.नांदेड

सारांश :-वैश्वीकरण या भूमंडलीकरण आधुनिक युग की अत्यंत महत्वपूर्ण संकल्पना एवं विशेषता है। आज वैश्वीकरण या भूमंडलीकरण, उदारीकरण और निजीकरण इन शब्दों को आम तौर पर समान अर्थों में प्रयुक्त किया जा रहा है, किंतु ये सभी शब्द एक–दूसरे से संबंधित होते हुए भी अलग–अलग हैं। उदारीकरण का अर्थ है, विश्व के सभी देशों में आपसी व्यापार हेतु कानूनी प्रतिबंधों में ढील देना, सीमा शुल्क तथा विभिन्न करों में काटौती करना और समस्त बाधाओं को दूर करते हुए आयात तथा निर्यात को आसान बनाना एवं विदेशी निवेशकों की सुरक्षा का ध्यान रखना।

प्रस्तावना :

निजीकरण की प्रक्रिया में सरकार के विभिन्न लोक–उपक्रमों को धीरे–धीरे बंद कर दिया जाता है और उद्योग, व्यापार तथा सेवा आदि क्षेत्रों को सरकारी नियंत्रण से मुक्त कर निजी निवेश को बढ़ावा दिया जाता है। वैश्वीकरण या भूमंडलीकरण, उदारीकरण और निजीकरण की अगली सीढ़ी है।

वैश्वीकरण एकरूपता एवं समरूपता की वह प्रक्रिया है, जिसमें संपूर्ण विश्व सिमटकर एक हो जाता है। वैश्वीकरण ने विश्व के सारे संसाधनों, ज्ञान, जानकारी, जनशक्ति और बाज़ारों को एक जगह पर लाकर खड़ा कर दिया है। वैसे हमारे लिए भूमंडलीकरण कोई नई चीज़ नहीं है, लेकिन उसका वर्तमान रूप अवश्य ही हमारे लिए एक नई बात है। प्राचीन काल से हमारे यहाँ 'वसुधैव कुटुँबकम' का नारा दिया गया है और संपूर्ण संसार के कल्याण की कामना की गई है। 'हे विश्वचि माझे घर' माननेवाली हमारी संस्कृति है। किंतु वर्तमान भूमंडलीकरण के युग में कुछ विशिष्ट समूहों तथा देशों के हितों का ही ध्यान रखा जाता है। यद्यपि उसके समर्थक आज भी उसे संपूर्ण संसार तथा मानवता को सुखी एवं समृद्ध बनाने वाली, दरिद्रता, विषमता, बीमारियाँ, कुपोषण, संघर्ष आदि को समाप्त कर शिक्षा एव ज्ञान के प्रसार की प्रक्रिया मानते है।

वैश्वीकरण पर चर्चा करते समय सदैव उसके आर्थिक पक्ष पर ही ध्यान केंद्रित किया गया, किंतु उसकी सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि भी है, जो अत्यंत सशक्त तथा महत्वपूर्ण है। वैश्वीकरण ने दुनिया को बहुत छोटा कर दिया है। आज 'विश्व एक गाँव' (GLOBAL VILLAGE) बन गया है और 'सास्कृतिक स्फोट' हो गया है। विश्व की सभी संस्कृतियाँ और सभ्यताएँ आज एक–दूसरे को आदान–प्रदान के माध्यम से प्रभावित कर रही हैं, जिससे एक नितांत नई विश्व–संस्कृति का उदय हुआ है। इस वैश्वीकरण के चलते उद्योग, व्यवसाय, आर्थिक उन्नति तथा जीवन–शैली के क्षेत्र में तो हमने बहुत अधिक उन्नति की है, किंतु हमारे प्राचीन मूल्य, मान्यताएँ, आदर्श, आस्थाएँ और परंपराएँ और टूट कर पूरी तरह बिखर गए हैं।

हिंदी साहित्य – जगत् में लगभग पिछले दो दशकों से भूमंडलीकरण पर चर्चा हो रही है, किंतु उस यथार्थ को सशक्त, प्रभावशाली और मार्मिक रूप में अभिव्यक्ति देने का श्रेय जाता है, 'रेहन पर रग्घू' (काशीनाथ सिंह), 'दौड' (ममता कालिया), 'एक ब्रेक दे बाद' (अलका सरावगी), 'विसर्जन' (राजु शर्मा) आदि उपन्यासों को।

'रेहन पर रग्घू' काशीनाथ सिंह की एक अत्यंत सशक्त औपन्यासिक कृति है। यह उपन्यास उत्तर औपनिवेशिक दौर की रचना है इस उपन्यास में भूमंडलीकृत अबूझ, जटिल मगर सच्ची दुनिया का यथार्थ चित्रण हुआ है। निःसंदेह इस वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने सर्वाधिक गहरा घाव भावनात्मक स्तर पर किया है। आज व्यक्ति और समाज मानवीय भावबोध से निरंतर दूर होता जा रहा है। उपन्यास के नायक रघुनाथ के इस कथन में इसकी अनुगूँज बहुत साफ सुनी जा सकती है, "देखो जग्गन, परायों में अपने मिल जाते हैं, लेकिन अपनों में अपने नहीं मिलते। ऐसा नहीं है कि अपने नहीं थे –थे लेकिन तब जब समाज था, परिवार थे, रिश्ते–नाते थे, भावना थी। भावना यह थी कि यह भाई है, यह भतीजा है, भतीजी है, यह कक्का यह काकी है, यह बुआ है, मामी है। भावना में कमी होती थी तो उसे पूरा कर देती थी लोक–लाज कि यह ऐसा नहीं करेंगे तो लोग क्या कहेंगे ? धुरी भावना थी, गणित नहीं, लेन–देन नहीं।"[1]

वर्तमान समय में भूमंडलीकरण, बाजारतंत्र और उपभोक्तावाद ने ऐसी स्थितियाँ उत्पन्न कर दी हैं, जिनमें मूल्य, आदर्श, प्रथा एवं परंपराएँ आदि सारी चीज़ें लुप्त–प्राय हो रही हैं। मूल्यों और आदर्शों पर चलने वाला आज अपनों ही के बीच फालतू हो गया है तथा निर्वासित

जीवन जीने को बाध्य है। किंतु 'रेहन पर रग्घू' उपन्यास का नायक रघुनाथ इस फालतूपन और निर्वासन को अपनी नियति नहीं बनने देता और न ही वह इन वर्तमान संकटो से आक्रांत है, बल्कि इन्हें लगातार चुनौती देता चलता है, "वह उन्हीं औज़ारों एवं दावपेंच के साथ इन प्रवृत्तियों से लड़ने के लिए खड़ा होता है, जिनका प्रयोग करके भूमंडलीकरण का अभियान चल रहा है। इसका बूढ़ा नायक उन बूढ़ों में से नहीं है, जो महानता की अवधारणाएँ टूटते देखकर कचोट में जीते हैं।"[2]

हमारी संयुक्त परिवार व्यवस्था पहले ही टूट कर बिखर चुकी है और अब औद्योगिक प्रगति, खुली अर्थव्यवस्था के फलस्वरूप उत्पन्न उदारीकरण, निजीकरण तथा भूमंडलीकरण के तीव्र गति से हो रहे प्रसार ने समाज का एक बड़ा हिस्सा वृद्धों को विस्थापित एवं उपेक्षित जीवन जीने को बाध्य कर दिया है। इधर के वर्षों में वृद्धावस्था पर केंद्रित कई उपन्यास लिखे गए हैं, 'रेहन पर रग्घू' मेरा घर है– और शायद आपका भी।"[3]

उपरोक्त लेखनीय कथन को लेकर प्रसिद्ध आलोचक पुष्पपाल सिंह जी की टिप्पणी विशेष महत्वपूर्ण है, "दरअसल, यह बीज कथन कथा को व्याप्ति और पाठक से सहज तादात्म्य ही नहीं देता, बल्कि पूरे भारतीय परिदृश्य की एक ऐसी गम्भीर समस्या को अत्यन्त सहजता से रेखांकित करता है, जो भूमंडलीय गाँव की सौगात है। रघुनाथ मास्टर ही नहीं, बल्कि आज का उच्च मध्यवर्ग या कहें पूरे मध्यवर्ग का आदमी उसी रूप में जीवन जी और भोग रहा है, जिस रूप में रग्घू।"[4]

रघुनाथ की यात्रा बनारस के समीपवर्ती गाँव पहाड़पूर से शुरू होकर बनारस में नई बनी कॉलोनी अशोक विहार तक की है, तो उसके बेटों की यात्रा नोएडा और अमरिका तक की। अपने बेटों का गाँव, गाँव की ज़मीन से उपराम होना रघुनाथ मास्टर को भीतर तक सालता है। उनकी पीड़ा इन शब्दों में व्यक्त होती है, "शीला, हमारे तीन बच्चे हैं, लेकिन पता नहीं क्यों कभी मेरे भीतर एक ऐसी हूक उठती है। जैसे लगता है मेरी औरत बाँझ है, और मैं निस्सन्तान पिता हूँ।"[5]

वैश्वीकरण, उदारीकरण और बाजारतंत्र के मायाजाल को, उसकी अजीब व जटिल दुनिया में जीवन जी रहे पात्रों की मनःस्थितियों एवं परिस्थितियों को यथार्थ अभिव्यक्ति देने में अलका सरावगी कृत 'एक ब्रेक के बाद' उपन्यास काफी हद तक सफल हुआ है। पूरा उपन्यास तीन खंडों में विभाजित है। उपन्यास का आरंभ होता है, मुख्य पात्र के.वी.शंकर अय्यर की साठवीं वर्षगाँठ पर आयोजित हवन से। उम्र के जिस पड़ाव पर लोग रिटायर होकर सक्रिय जीवन की अतिश्री समझ लेते हैं, के.वी.शहर में सबसे ज्यादा पैसा पाने वाला मार्केटिंग कंसलटेंट है और नौकरियाँ उसके इर्द–गिर्द चक्कर लगाती है। के.वी. का करियर सफल भले ही हो, सार्थक नहीं है। इस बात को शायद के.वी. भी जानता है। इसीलिए तो वजह–बेवजह बरस पड़ता है। गुडगाँव में होंडा के मज़दूरों पर पुलिस के लाठी चार्ज को वह सही मानता है, पर उसे स्वीकारने का नैतिक साहस नहीं कर पाता है, "पुलिस को मज़दूरों पर इस तरह अत्याचार करते देख तकलीफ तो होती है, पर देश की भलाई में 'कोलेटेरल डैमेज' यानी छोट–मोटे आनुषंगिक नुकसान तो उठाने ही होंगे।"[6]

किंतु पिछले दस–पंद्रह वर्षों में दुनिया इतनी तेजी से बदल गई है कि उसकी रफतार को पकड़ना के.वी.की पीढ़ी के लिए इतना आसान नहीं है। फिर भी के.वी.ने उस व्यवस्था से समझौता कर लिया है, जो व्यवस्था अब कॉरपोरेट कंपनियाँ चलाती हैं। वे ज़माने से तालमेल मिलाकर चल रहे हैं।

कॉरपोरेट जगत् की सच्चाई को उजागर करने के लिए अलका जी ने गुरूचरण, भट्ट और रघुनाथन इन तीन चरित्रों को चुना है। गुरूचरण राय एक बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनी में मुख्य कार्यकारी अधिकारी (C.E.O.) हैं। वह अपनी कंपनी की मध्य प्रदेश में डेढ़ वर्ष पूर्व खरीदी गई खदानों के बारे में एक रिपोर्ट तैयार कर रहा था और वहाँ के आदिवासियों में काफी लोकप्रिय भी था। किंतु इसी बीच वह गायब हो जाता है और एक दिन उसकी मृत्यु हो जाती है। गुरू की मौत न हादसा है, न संयोग। न रहस्य, न सामान्य घटना। वह है, एक निरूपाय उलझन – यह उलझन गुरूचरण की ही नहीं स्वयं लेखिका की भी है।

गुरूचरण की लिखी डायरी से पता चलता है कि, "जहाँ वह रह रहा था, किसी बड़ी कंपनी ने कुछ दूर के एक गाँव में पुलिस की मद्द से रातोंरात सोते हुए गाँववालों को स्त्री, पुरूष, बूढ़े, बच्चे सबको – भेड़–बकरियों की तरह उठाकर जेल भेज दिया था। उनके चूल्हे–चक्की, खेत–बाग, पशु–प्राणी सबको रौंदकर मिट्टी में मिला दिया। छह सौ से ज्यादा घर उज़ाड दिए और उनमें से सौ एक को जमीन–पैसा देकर छुट्टी पा ली। बाकी सब दिहाड़ी मज़दूर बनकर या भिखारी बनकर हमारे शहरों की क्रॉसींग पर भीख माँगते रहे या मर–खप गए।"[7]

इस बात में अब कोई संदेह नहीं कि हमारे देश में आज सेझ (SEZ) के नाम पर, उन्नति एवं प्रगति के नाम पर यही सबकुछ हो रहा है। आदिवासियों को अपनी ज़मीन से बेदख़ल करने का राष्ट्रीय कार्यक्रम चलाया जा रहा है, जो बेहद शोचनीय है। उपजाऊ ज़मीन पर फॅक्टरियाँ खोली जा रही हैं और किसान भीक माँगने तथा आत्महत्या करने के लिए विवश हो रहा है। गुरूचरण कॉरपोरेट जगत् से नाता तोड़कर मानवता से परिपूर्ण अपनी एक अलग सपनों की दुनिया बनाकर जीना चाहता था, पर उसका सपना साकार नहीं हो सका।

उपन्यास का दूसरा महत्वपूर्ण पात्र है, रंगनाथन। रंगनाथन के.वी. का मित्र है, किंतु के.वी. की दृष्टि में वह 'मूर्ख जीनियस' है। लेखिका ने उपन्यास में रंगनाथन को विवके एवं नैतिकता का प्रतीक बनाकर प्रस्तुत किया है। वह वैश्वीकरण के नाम पर हो रहे मूल्यों के नैतिक अधःपतन का, पनपती हुई नई असभ्य एवं भ्रष्ट व्यवस्था का विरोध करता है। वह जब–तब के.वी. पर, उसकी मानसिकता एवं भोगवादी दृष्टिकोन पर प्रहार करता रहता है। वह सेझ का भी विरोध करता है। किंतु वैश्वीकरण का ही यह परिणाम है कि रंगनाथन जैसी प्रजाति तेज़ी से लुप्त हो रही है और के.वी. जैसी मानसिकता वाले सर्वत्र भगवान का दर्जा पा रहे हैं।

उपन्यास का तीसरा महत्वपूर्ण पात्र है भट्ट, जो कॉरपोरेट की दुनिया के छलावे से सर्वाधिक ग्रस्त है। आए दिन शहर और नौकरियाँ बदलना मानो उसकी नियति है। भट्ट आज की उस युवा पीढ़ी का प्रतीक है, जिसकी प्रतिभा का इस्तेमाल करके, उसका दोहन करके बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ करोड़ो कमाती हैं और काम निकल जाने पर उसे दूध की मक्खी की तरह निकाल फेंकती हैं। भट्ट और रंगनाथन के.वी. और कार्पोरेट जगत की नीतियों से असहमत होते हुए भी अपनी कोई स्वतंत्र पहचान नहीं बना पाते हैं। "एक ब्रेक के बाद" दरअसल वर्तमान परिदृश्य की विभिषिका को पूरी गहराई के साथ पकड़ लेना चाहता है। इसके लिए लेखिका ने जमकर श्रम भी किया है और शोध करके तथ्य तथा आँकडे भी जुटाए हैं।"[8]

एक तरह से देखें तो यह उपन्यास कॉरपोरेट वर्ल्ड से जुड़े कुछ चरित्रों की जीवन कथा है, लेकिन देखते ही देखते यह कथा कुछ चरित्रों तक सीमित न रहकर कॉरपोरेट इंडिया की कहानी बन जाती है, उसकी तमाम मान्यताओं, विडम्बनाओं, धोखों और षड़यंत्रों से दो–चार होती है। ..... दुनिया का शासन अब सरकारें नहीं चला रही है, कॉरपोरेट कंपनियाँ चला रही हैं, सरकारें और पार्टियाँ तो बस ऊपरी ढाँचे हैं।.... ... उपन्यास की भाषा उपभोक्तावादी और कॉरपोरेट संस्कृति में प्रयुक्त शब्दावली और मुहावरों से भरपूर है, जो पाठक को चमत्कृत करती है।.... ... उपन्यास पाठक के सामने बिल्कुल नई दुनिया खोल देता है – एक ऐसी दुनिया जिसका वह हिस्सेदार है, फिर भी उसके बारे में वह बहुत कम जानता है।"[9]

वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में लिखे गए हाल ही के उपन्यासों में विदुषी कथाकार ममता कालिया कृत 'दौड़' उपन्यास काफी चर्चित एवं लोकप्रिय रहा है। भूमंडलीकरण, उदारीकरण और निजीकरण ने इक्कीसवीं सदी में युवाओं के सामने सपनों की एक अलग और नितांत नई दुनिया का द्वार खोल दिया है, जिसके चलते कई नए ढंग के रोजगार और नौकरियाँ उपलब्ध हो गई हैं। बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने रोजगार के नए अवसर प्रदान करने के साथ–साथ बाजारतंत्र और उपभोक्तावादी संस्कृति को भी जन्म दिया है। युवाओं ने इस नए दौर में नए तंत्र पर सवार होकर सफलता तो खूब अर्जित की है, पर मानवीय संबंध और आपसी रिश्ते इनसे कहीं छूटकर बहुत दूर चले गए हैं। घ्दौड़ङउपन्यास अपने लघु कलेवर में वैश्वीकरण की इस अंधी घ्दौड़ङ में शामील उन चरित्रों की यथार्थ कहानी को अंकित करता है, जो आगे–ही–आगे बढ़ने की धुन में अपनों से, अपनी मिट्टी से, अपनी सभ्यता एवं संस्कृति से दूर बहुत दूर निकल जाते हैं। पवन, सघन, अभिषेक और स्टैला इसी वैश्वीकरण के दौर के बहुराष्ट्रीय कंपनियों से जुड़े पात्र हैं।

जन्म देने वाले माता–पिता अपनी संतानों की सफलता से प्रसन्न होने की बजाय भयभयीत हैं, और स्वयं को बहुत ही असुरक्षित अनुभव कर रहे हैं, "ये सब कामयाब संतानों के माँ–बाप थे। हर एक के चेहरे पर भय और आशंका के साए थे। बच्चों की सफलता इनके जीवन में सन्नाटा बुन रही थी। कॉलोनी में कमोबेश सभी की यह हालत थी। इस बुड्ढा–बुड्ढी कॉलोनी में सिर्फ सर्दी–गर्मी की लम्बी छुट्टियों में कुछ रौनक दिखाई देती। ..... बच्चों को सुरक्षित भविष्य के लिए तैयार कर हर घर, परिवार के माँ–बाप खुद एकदम असुरक्षित जीवन जी रहे थे।"[10]

पवन के माता–पिता दो पुत्रों के होते हुए भी बुढ़ापे में अकेले जीने को अभिशप्त हैं। पवन को एम.बी.ए. कराने वाले राकेश और रेखा का सपना था, उसे उज्वल भविष्य देना। पर मल्टीनेशनल कम्पनी से जुड़ते ही पवन एक ऐसी दुनिया में चला जाता है, जहाँ रेखा और राकेश के लिए कोई जगह नहीं है, 'रेखा, राकेश, पवन और सघन के इर्द–गिर्द बुनी यह साधारण–सी कहानी आज हर तीसरे परिवार में दोहराई जा रही है। बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए माँ–बाप जहाँ मिलकर सुख–सुविधाएँ समेटते हैं, उन्हे महँगी और ऊँची शिक्षा देकर स्वप्निल दुनिया का दरवाजा दिखाते हैं, वहाँ बच्चे इस बदले परिवेश में सरसराते हुए इतने आगे निकल जाते हैं कि उन्हें माँ–बाप के उन बेशकीमती क्षणों को याद करने का वक्त ही नहीं मिलता।"[11]

हताश और निराश माता–पिता के यह उद्गार मन को कचोटे बिना नहीं रहते, ऐसा ही पता होता तो पच्चीस बरस पहले परिवार नियोजन क्यों करते। होने देते चार–छह बच्चे। एक–न–एक तो पास रहता।"[12]

वैश्वीकरण, उदारीकरण और निजीकरण ने आज जिस आजाविकावाद एवं प्रतिस्पर्धा को जन्म दिया है, उसकी अंधी दौड़ में पारिवारिक संबंध, रिश्ते–नाते, मानवीयता, संवेदना, आत्मीयता, नैतिकता, परंपरा, सत्य, ईमानदारी, त्याग और परोपकार जैसे आदर्श एवं मूल्य सब अर्थहीन तथा दकियानूस हो गए हैं। पवन और राजुल में विज्ञापन एजेंसियों द्वारा ग्राहकों को ठगे जाने की बात को लेकर बहस हो रही है। लेकिन पवन इसे गलत नहीं मानता और राजुल का प्रतिवाद करता हुआ कहता है, "दरअसल बाजार के अर्थशास्त्र में नैतिकता जैसा शब्द लाकर राजुल, तुम सिर्फ कन्फ्युजन फैला रही हो। मैंने अब तक पाँच सौ किताबें तो मैनेजमेंट और मार्केटिंग पर पढ़ी होंगी। उनमें नैतिकता पर कोई चैप्टर नहीं है।"[13] राजुल का पति अभिषेक भी सत्य, नैतिकता को नकारता है।"[14]

वैश्वीकरण की इस प्रक्रिया ने राष्ट्रीय–चेतना को भी शिथिल कर दिया है और रिश्ते बहुत ही व्यावहारिक, रस्मी और सतही हो गए हैं। पैसा, ग्लैमर, भव्यता और चकाचौंध की दीवानी यह पीढ़ी किसी के भी कंधे पर पाँव रखकर सफलता का चरम चूमना चाहती है। उसके लिए सामाजिक बंधन, परिवार, अपनापन, ममत्व सब छलावा है। तभी तो पवन को 'अपनी जन्मभूमि का पानी रास नहीं आता'[15] और 'माँ का बिना बताए शहर आना भी नहीं सुहाता'। पवन और स्टैला विवाह तो कर लेते हैं, किंतु महत्व अपने करिअर को ही देते हैं। निश्चय ही 'कम्पनी की कर्मभूमि ने इन पात्रों को इस युग का अभिमन्यू बना दिया है।'[16]

वैश्वीकरण की एक उपज उपभोक्ता संस्कृति में हमारी संस्कृति के लिए कोई स्थान नहीं है। पवन पिता से कहता है, "पापा मेरे लिए शहर महत्वपूर्ण नहीं है, कैरियर है। ..... मैं ऐसे शहर में रहना चाहता हूँ, जहाँ कल्चर हो न हो, कंज्यूमर कल्चर जरूर हो। मुझे संस्कृति नहीं, उपभोक्ता संस्कृति चाहिए तभी मैं कामयाब रहूँगा।"[17]

'दौड' उपन्यास पर ममता कालिया जी की निम्न टिप्पणी अत्यंत मार्मिक एवं सटीक है, "आर्थिक उदारीकरण ने भारतीय बाज़ार को शक्तिशाली बनाया। इसने व्यापार प्रबंन्धन की शिक्षा के द्वार खोले और छात्र वर्ग को व्यापार प्रबन्धन में विशेषता हासिल करने के अवसर दिए। बहुराष्ट्रिय कंपनियों ने रोजगार के नए अवसर प्रदान किए। युवा वर्ग ने पूरी लगन के साथ इस सिमसिम द्वार को खोला और इसमे प्रविष्ट हो गया। वर्तमान सदी में समस्त अन्य वाद के साथ एक नया वाद आरम्भ हो गया, बाजारवाद और उपभोक्तावाद। ..... जिन युवा–प्रतिभाओं ने यह कमान संभाली उन्होंने कार्यक्षेत्र में तो खूब कामयाबी पायी पर मानवीय सम्बधों के समीकरण उनसे कहीं ज्यादा खिंच गए, तो कहीं ढीले पड़ गये। 'दौड़' इन प्रभावों और तनावों की पहचान कराता है।"[18]

ममता कालिया ने उपन्यास के पात्रों और उनकी परिस्थितियों के माध्यम से जो कुछ भी व्यक्त किया है, निसंदेह वह आज के प्रत्येक मनुष्य की प्रामाणिक आलोचना लगती है। वैश्वीकरण ने संपूर्ण संसार की सूरत को ही बुनियादी तौर पर बदलकर रख दिया है। यह कहना गलत नहीं होगा कि उसने मनुष्य के मूल्यों, आस्थाओं, आदर्शों, संवेदनाओं और संबंधों के क्षेत्र में अब तक के इतिहास की सबसे भारी उथल–पुथल पैदा की है। वैश्वीकरण के मनुष्यता पर पड़ने वाले प्रभाव पर केंद्रित कई रचनाएँ मिल जाती हैं, किंतु वैश्वीकरण की शक्ति, उसकी संरचना का उसी की ज़मीन पर विखंडन करने का वास्तव श्रेय जाता है, काशीनाथ सिंह के 'रेहन पर रग्घू,' ममता कालिया के 'दौड,'

अलका सरावगी के 'एक ब्रेक के बाद,' राजू शर्मा कृत 'विसर्जन' आदि उपन्यासों को।

संदर्भ :–

1.काशीनाथ सिंह : रेहन पर रग्घू (उपन्यास, पृ.101)
2.अजय वर्मा : तद्भव (त्रैमासिक पत्रिका, पृ.18)
3.काशीनाथ सिंह : रेहन पर रग्घू (उपन्यास, भूमिका)
4.पुष्पपाल सिंह : प्रकाशन समाचार (मासिक, पृ.04)
5.काशीनाथ सिंह : रेहन पर रग्घू (उपन्यास, भूमिका)
6.अलका सरावगी : एक ब्रेक के बाद (उपन्यास, पृ.117)
7.अलका सरावगी : एक ब्रेक के बाद (उपन्यास पृ.170)
8.रोहिणी अग्रवाल : आलोचना (त्रैमासिक,अक्तूबर–दिसम्बर 2009)
9.किरण अग्रवाल : पाखी (मासिक, सितंबर 2008)
10.ममता कालिया : दौड़ (उपन्यास, पृ.69, 75)
11.ममता कालिया : दौड़ (उपन्यास, पृ.90)
12.ममता कालिया : दौड़ (उपन्यास पृ. 82)
13.ममता कालिया : दौड़ (उपन्यास पृ. 39)
14.ममता कालिया : दौड़ (उपन्यास पृ. 37)
15.ममता कालिया : दौड़ (उपन्यास पृ. 44)
16.ममता कालिया : दौड़ (उपन्यास पृ. 25)
17.ममता कालिया : दौड़ (उपन्यास, पृ. 41)
18.ममता कालिया : दौड़ (उपन्यास, पृ. 5, 6)

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net